सूरह — एक कहानी

सूरह अल-फ़लक़

सुबह का उजाला

पूरा सफ़र — पहली किरन के रब की पनाह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 113 • 5 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़ुल अ'ऊज़ु बि-रब्बिल्-फ़लक़

1. कह दीजिए: मैं पनाह माँगता हूँ सुबह फाड़ने वाले के रब की।

मिन शर्रि मा ख़लक़

2. हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की।

व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब

3. और अँधेरी रात के शर से जब वो छा जाए।

व मिन शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-'उक़द

4. और गिरहों में फूँकने वालियों के शर से।

व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद

5. और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।

सुबह फाड़ने वाला

बेटा, यह उस जोड़ी की पहली सूरह है जिसे 'मु'अव्विज़तैन' कहा जाता है। अन-नास में हम एक ही दुश्मन से पनाह माँगते हैं — जो अंदर से बोलता है। और अल-फ़लक़ में हम बाहर के शर से पनाह माँगते हैं।

'क़ुल अ'ऊज़ु बि-रब्बिल्-फ़लक़ — कह दीजिए: मैं पनाह माँगता हूँ फ़लक़ के रब की।'

बेटा, लफ़्ज़ 'फ़लक़' का असल मतलब है फाड़ना, चीरना। इसी से सुबह को 'फ़लक़' कहा जाता है — क्योंकि रोशनी रात के अँधेरे को फाड़ कर निकलती है।

और क़ुरआन में इसी लफ़्ज़ का इस्तेमाल दाने के लिए भी हुआ है — 'फ़ालिक़ुल-हब्बि वन्-नवा' — वो जो दाने और गुठली को फाड़ते हैं। एक सख़्त दाना ज़मीन के नीचे फटता है और उसमें से एक नर्म कोंपल निकल आती है।

बेटा, अब देखिए कि यह नाम यहाँ क्यों चुना गया।

आप पनाह माँग रहे हैं उस ज़ात की जिसका काम ही यह है कि वो बंद चीज़ों को खोल देते हैं। जो अँधेरे को चीर कर रोशनी निकालते हैं। जो बंद दाने को फाड़ कर ज़िंदगी निकालते हैं।

यानी: आपकी जो भी हालत है — चाहे कितनी ही बंद, कितनी ही अँधेरी — आप उसके रब को पुकार रहे हैं जो चीरने और खोलने पर क़ादिर है।

चार चीज़ों से पनाह

बेटा, अब इस सूरह की तरतीब देखिए। पहले एक आम पनाह, फिर तीन ख़ास।

'मिन शर्रि मा ख़लक़ — हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की।'

बेटा, यह एक जुमला पूरी कायनात को समेट लेता है — हर मख़लूक़, हर जानदार, हर हादसा, हर वो चीज़ जिसका नाम भी आपको नहीं मालूम।

और इसमें एक नाज़ुक बात है: 'शर्रि मा ख़लक़' — उस चीज़ का शर जो उसने पैदा की। यानी शर भी उसके इख़्तियार से बाहर नहीं। आप किसी ऐसी ताक़त से नहीं डर रहे जो अल्लाह के क़ाबू से आज़ाद हो।

और बेटा, यह भी समझ लीजिए कि अल्लाह ने शर को पैदा किया — मगर वो ख़ुद ख़ैर-ए-महज़ हैं। हर चीज़ में हिकमत है; जो हमें शर दिखता है, वो उनके इल्म में एक बड़े निज़ाम का हिस्सा है।

'व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब — और अँधेरी रात के शर से जब वो छा जाए।'

बेटा, 'ग़ासिक़' वो रात है जिसका अँधेरा गहरा हो, और 'वक़ब' का मतलब है पूरी तरह उतर आना, छा जाना।

क्यों रात? क्योंकि रात में वो सब कुछ आसान हो जाता है जो दिन में मुश्किल है। चोरों का वक़्त रात है। दरिंदे रात को निकलते हैं। और बेटा, गुनाह भी ज़्यादातर रात को होते हैं — जब कोई देख नहीं रहा होता, जब अकेलापन होता है, जब दिल सबसे ज़्यादा कमज़ोर होता है।

और इंसान के अपने अंदेशे भी रात को सबसे बड़े लगते हैं। वही फ़िक्र जो दोपहर में क़ाबिल-ए-हल लगती थी, दो बजे रात को नामुमकिन लगने लगती है।

बेटा, इसी लिए नबी ﷺ ने शाम के वक़्त बच्चों को घर में रोक लेने का हुक्म दिया था जब अँधेरा फैलने लगता है।

गिरहों में फूँकने वाले

'व मिन शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-'उक़द — और गिरहों में फूँकने वालियों के शर से।'

बेटा, यह जादू की तरफ़ इशारा है — उस ज़माने में एक तरीक़ा यह था कि धागे में गिरहें लगाई जातीं और उन पर फूँका जाता।

और बेटा, यह हक़ीक़त है — क़ुरआन ने इसे माना है, और नबी ﷺ पर भी जादू किया गया था, और उलमा के मुताबिक़ यही दो सूरहें उस वक़्त नाज़िल हुई थीं और उन्हीं के पढ़ने से आप ﷺ को शिफ़ा मिली।

मगर देखिए, इस पूरी किताब में जादू का ज़िक्र आता है तो हमेशा उसकी हद के साथ। सूरह अल-बक़रह में साफ़ कहा गया: 'व मा हुम बि-दारीना बिही मिन अहदिन इल्ला बि-इज़्निल्लाह' — वो इसके ज़रिए किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते मगर अल्लाह की इजाज़त से।

बेटा, इसलिए दो बातें साथ रखिए। एक: यह चीज़ मौजूद है, इसे मज़ाक़ मत समझिए। दो: इसका इलाज कोई आमिल या ताबीज़ नहीं — इसका इलाज यही है जो अल्लाह ने ख़ुद बताया: पनाह माँगना, क़ुरआन पढ़ना, अज़कार पर पाबंदी।

और बेटा, आजकल इस मैदान में लोगों का बहुत इस्तेहसाल होता है — डर बेच कर पैसा बनाया जाता है। जिस शख़्स को अल्लाह ने पनाह का तरीक़ा ख़ुद सिखा दिया हो, वो किसी के दरवाज़े पर क्यों जाए?

हसद करने वाला

'व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद — और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।'

बेटा, इस सूरह की आख़िरी पनाह हसद से है — और ग़ौर कीजिए कि यह किसके साथ एक फ़ेहरिस्त में रखा गया है: गहरी रात के साथ, और जादू के साथ।

यानी हसद को क़ुरआन ने उन चीज़ों के दर्जे में रखा है।

और बेटा, अल्फ़ाज़ पर ध्यान दीजिए: 'हासिदिन इज़ा हसद' — हसद करने वाले से जब वो हसद करे। यानी जब तक वो दिल में है और उस पर अमल नहीं हुआ, तब तक वो अलग बात है; शर उस वक़्त शुरू होता है जब वो हरकत में आता है — नज़र, बात, साज़िश, रुकावट।

बेटा, हसद की हक़ीक़त समझ लीजिए। हसद यह नहीं कि आप भी वही चीज़ चाहें — वो तो रश्क है, और जाइज़ है। हसद यह है कि आप चाहें कि दूसरे से वो चीज़ छिन जाए।

और इस बीमारी की सबसे अजीब बात यह है: हसद करने वाला अपने आपको सबसे ज़्यादा जलाता है। दूसरे की नेमत कम नहीं होती; उसकी अपनी रातें ख़राब होती हैं।

बेटा, और एक बात जो ध्यान में रखिए: हसद अल्लाह की तक़सीम पर ए'तिराज़ है। जब आप किसी के पास कुछ देखकर जलते हैं, तो दरअसल आप कह रहे होते हैं कि यह तक़सीम ग़लत हुई।

और बेटा, इसी लिए नबी ﷺ ने सिखाया कि जब तुम्हें कोई चीज़ पसंद आए तो बरकत की दुआ कहो — 'मा शा अल्लाह, ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह' — ताकि तुम्हारी नज़र से किसी को नुक़सान न पहुँचे।

और इससे हिफ़ाज़त का तरीक़ा भी सीख लीजिए: अपनी हर नेमत का एलान ज़रूरी नहीं। यूसुफ़ (अलैहि0) का ख़्वाब उनके वालिद ने उन्हें छुपाने को कहा था। कुछ चीज़ें ख़ामोशी की हिफ़ाज़त माँगती हैं।

दो सूरहें, दो सिम्तें

बेटा, आख़िर में दोनों सूरहों को साथ रखकर देखिए — पूरी तस्वीर खुल जाती है।

अल-फ़लक़ बाहर के शर से पनाह है: मख़लूक़, रात, जादू, हसद। और इसमें अल्लाह

का सिर्फ़ एक नाम लिया गया — 'रब्बिल-फ़लक़'।

अन-नास अंदर के शर से पनाह है: सीने का वसवसा। और इसमें अल्लाह के तीन नाम लिए गए — रब, मलिक, इलाह।

बेटा, सोचिए — बाहर के चार ख़तरों के लिए एक नाम, और अंदर के एक ख़तरे के लिए तीन। यह ख़ुद बता रहा है कि असल जंग कहाँ है।

बाहर का नुक़सान आपका माल, सेहत, या जिस्म ले सकता है। अंदर का वसवसा आपका दीन ले जाता है।

बेटा, इसी लिए ये दो सूरहें हमेशा साथ पढ़ी जाती हैं। एक आपके चारों तरफ़ दीवार खींचती है, दूसरी आपके सीने के अंदर पहरा बिठाती है।

और दोनों का आग़ाज़ एक ही लफ़्ज़ से होता है: **क़ुल अ'ऊज़ु** — कह दो: मैं पनाह माँगता हूँ।

बेटा, अल्लाह ने यह नहीं कहा 'लड़ लो'। उन्होंने कहा 'मेरे पास आ जाओ'। और यही इस दीन का पूरा मिज़ाज है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'फ़लक़' का मतलब है फाड़ना — आप उस ज़ात को पुकार रहे हैं जो अँधेरे को चीरती और बंद दाने को खोलती है।

2. शर भी उसकी पैदा की हुई चीज़ है — यानी कोई ऐसी ताक़त नहीं जो उसके इख़्तियार से बाहर हो।

3. रात का ज़िक्र इसलिए है कि अँधेरे में हर मुश्किल बड़ी और हर गुनाह आसान लगता है।

4. जादू हक़ीक़त है — मगर 'इल्ला बि-इज़्निल्लाह'; और उसका इलाज अल्लाह ने ख़ुद बताया: पनाह, क़ुरआन, अज़कार।

5. हसद को रात और जादू के साथ एक फ़ेहरिस्त में रखा गया है।

6. हसद करने वाला सबसे ज़्यादा ख़ुद जलता है — और वो दरअसल अल्लाह की तक़सीम पर एतिराज़ कर रहा होता है।

7. चार बाहर के ख़तरों के लिए अल्लाह का एक नाम, एक अंदर के ख़तरे के लिए तीन — असल जंग अंदर है।

या अल्लाह, हमें हर उस शर से बचाइए जो दिखता है और जो नहीं दिखता, और हमारे दिलों को हसद से पाक फ़रमाइए। आमीन।